# सिद्धि के लिए भाव शुद्धि जरूरी : युवाचार्य महाश्रमण

**लाडनूं 27, मई।**

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सिद्धि के लिए भाव शुद्धि जरूरी होती है। भावों के अनुसार ही कर्मों का बंधन होता है। भावों और दृष्टिकोण में अन्तर होने पर क्रिया में, परिणाम में अन्तर आ जाता है।

युवाचार्य महाश्रमण जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में 'पण्णवणा' सूत्र पर प्रवचन करते हुए कहा कि चाकू का प्रयोग जब डाकू करता है तो मारने का प्रयास हाता है और उसी चाकू का प्रयोग जब डॉक्टर करता है तो आदमी को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने का भाव होता है। भावों के आधार पर ही हमारी गतिविधियां संचालित होती है। उन्होंने कहा कि भावना को, विचारों को, आचरण को शुद्ध रखने पर अगली गति अच्छी होगी। उन्होंने कहा कि आचरण में नैतिकता तभी आ सकती है जब भावों में नैतिकता आयेगी।

युवाचार्य महाश्रमण ने सभा में उपस्थित राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के संभागिकयों को संबोधित करते हुए कहा कि बालक संयम करना सीखे। पानी की समस्या है किल्लत है, शिविरार्थियों को पानी का संयम करना चाहिए और अपव्य न हो इस ओर ध्यान देना चाहिए। पानी जीव होता हैं पानी के दुरुपयोग से हिंसा होती है। इसका संयम आवश्यक है उन्होंने कहा कि त्याग और संयम में शक्ति होती है। सच्चाई में समाधान है। जीवन में सच्चाई आने का मतलब है भावों में पवित्रता का समावेश हुआ है। उन्होंने झूठ बोलने के कारणों का विश्लेषण करते हुए कहा कि क्रोध, लोभ, भय, हास्य और विस्मृति के कारण व्यक्ति झूठ बोलता है, शिविरार्थी जीवन में झूठ बोलने से बचने का प्रयास करे। उन्होंने राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि सज्जनों का सम्मान करना और दुर्जनों पर अनुशासन करना राजा का कर्त्तव्य होता है। राजा को इस ओर ध्यान देना चाहिए की उसकी प्रजा भूखी न रहे। आश्रितों का भरण पोषण करना राजा का फर्ज है।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर के संभागी सियाल बहिनों ने गीत की प्रस्तुति दी एवं दिल्ली निवासी मौनिका बैद ने विचार प्रस्तुत किये। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।